IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बासंती प्रियवंदा : यथार्थक अवलोकन

डॉ0 राज कुमार प्रसाद

अध्यक्ष, मैथिली विभाग

जनता कोशी महाविद्यालय

बिरौल, दरभंगा

सारांश

'बासंती प्रियवंदा' मैथिलीक बाल उपन्यास, डॉ. अमरनाथ मिश्र रचित अछि। एहिमे दू विषय पर प्रमुख रूपसँ चर्चा कएल गेल अछि । पहिल अछि बच्चाक शिक्षामे मार्गदर्शन आ दोसर अछि ओकर सामाजिक–सांस्कृतिक विकासमे बाधक भेल समाजमे अन्धविश्वास, प्राचीन कालसँ चल अबैत परम्परा आ अनावश्यक फिजुलखर्ची रीति–रेवाजक चर्चाक संग ओहिसँ बहरेबाक बाट सेहो देखओलनि अछि । संगहि पोथीक माध्यमसँ लेखक विज्ञानक कतेको रहस्य सभक ज्ञान बच्चा सभकेँ देबाक कोशिश कएलनि अछि ।

बीज शब्द : यथार्थ, अवलोकन, बाल उपन्यास, मार्गदर्शन, अंधविश्वास, विज्ञानक चमत्कार, परम्परा, रीति–रेवाज

प्रस्तावना

"लीक–लीक गाड़ी चले, लीकहि चले कपूत ।

लीक छोड़ि तीन चले, शायर, सिंह, सपूत ।।"

ई एकटा प्रसिद्ध प्रेरक लोकोक्ति अछि । जकर अर्थ होइत अछि हमरा सभकेँ पारम्परिक नियमधरि सीमित नहि रहबाक चाही, बल्कि अपन ज्ञान, कौशल ओ हिम्मतसँ नव रास्ता बनाकेँ चलबाक चाही, खासकेँ तखन जँ हम समाजक लेल किछु नीक करए चाहैत छी ।

अमरनाथ मिश्र मैथिली साहित्यमे एक कथाकारक रूपमे 2010 ई.मे आयल छथि आ 'बासंती प्रियंवदा' बाल उपन्यास लिखि बाल उपन्यासकारक श्रेणीमे सेहो अपना आपकेँ स्थापित कऽ लेने छथि मुदा एहिमे निरंतरता नहि देखबामे आबि रहल अछि । एकर बाद एखनधरि हिनक दोसर कोनो औपन्यासिक कृति दृष्टि–पटलपर नहि आयल अछि ।

'बासंती प्रियंवदा' बाल उपन्यास बच्चा बासंती नामक बचिया आ अभिभावक अमरेन बाबूक मध्य संवादसँ प्रारंभ कएल गेल अछि ।

एहि उपन्यासक विषय वस्तुक मूल्यांकन उपन्यासक मुख्य छओटा तत्त्व कथानक, चरित्र–चित्रण, कथोपकथन, भाषा–शैली, वातावरण ओ उद्देश्यकेँ ध्यानमे राखि करब हमर ध्येय अछि ।

'कथानक'क स्थान उपन्यासक तत्त्वमे सर्वोपरि अछि । जहिना मानवक काया, कंकाल पर स्थिर रहैत अछि तहिना उपन्यासरूपी काया कथानक पर अवलम्बित रहैत अछि । रोचकता, विश्वसनीयता, यथार्थता एवं व्यापकता उपन्यासक कथानकक प्रधान गुण होइत अछि ।

'बासंती प्रियंवदा' बाल उपन्यासक प्रकाशन 2023 सिद्धिरस्तु, दिल्लीसँ भेल । एहिमे अभिनव भावभूमि पर आधारित कथानक प्रस्तुत कयल गेल अछि ई सम्पूर्ण बाल उपन्यास 101 पृष्ठमे लिखल गेल अछि जे अठारह ठहराबक अछि ।

एहि उपन्यासक कथानकक सम्बन्धमे श्री हरिमोहन झा, अध्यक्ष, सिद्धिरस्तुक कहब छन्हि जे– ''मान्यता छैक जे कथा सदैव समाजक यथार्थ रूपकेँ अभिव्यक्त करैत अछि । ओना तऽ कथा काल्पनिक आओर वास्तविक घटनाक्रमकेँ आधार मानि रचल जाइत अछि मुदा लेखक, कथानककेँ माध्यमसँ वर्त्तमान सामाजिक परिवेशकेँ स्पष्ट रूपसँ परिलक्षित करैत छथि ।''[1]

एकर कथानक सामाजिक–सांस्कृतिक अंधविश्वास, रीति–रेवाज पर तँ आधारित अछिये संगहि बच्चा–अभिभावक दुनूक मार्गदर्शन आ विज्ञानक कतेको रहस्य सभक ज्ञान बच्चा सभकेँ देबाक कोशिश कएलनि अछि ।

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क कहब एहि उपन्यासक कथानकक सम्बन्धमे प्रासंगिक अछि– ''एहिमे दू विषय पर प्रमुख रूपसँ चर्चा कएल गेल अछि । प्रथम अछि बच्चाक शिक्षामे मार्गदर्शन । दोसर अछि ओकर सामाजिक–सांस्कृतिक विकास (जकरा संस्कार सेहो कहि सकैत छिऐक)मे बाधक भेल समाजमे व्याप्त अन्धविश्वास आ अनावश्यक फिजूलखर्चीवला रीति–रेवाजक चर्चा । कोन तरहेँ बच्चा स्कूलमे नीकसँ पढ़ए आ कोन तरहेँ ओ एकैसम शताब्दीक वैज्ञानिक युग लेल अपनाकेँ संसकारी बनाबए, दूनू महत्त्वपूर्ण छैक । यदि बच्चा दृढ़ प्रतिज्ञ अछि आ अभिभावक बुझनूक छथिन (जरूरी नहि जे पढ़ले–लिखल होथि) तऽ अर्थाभाव कोनो बाधा नहि होएतैक ।''[2]

एकर कथानक सम्बन्धमे ई स्वतः स्पष्ट भऽ जाइछ जे ओहि विषयकेँ कथानक आधार बनाओल गेल अछि जे बाल–शिक्षाक संगहि समाजमे प्रचलित रीति–रेवाज ओ अंधविश्वासपरक परम्परा चलि आबि रहल अछि ताहिकेँ तोड़ि समाजमे नव व्यवस्था कायम करबाक चाही जाहिसँ नव प्रगतिशील समाजक निर्माण भऽ सकय। कथानकक किछु अंश द्रष्टव्य– ''बीसम शती विज्ञानक शती छलै । संसार भरिमे विज्ञानकेँ प्रमुखता भेटलै । लोक अंधविश्वास सँ उबरल, वैज्ञानिक सोच अपनौलक । उड़िकऽ चलि गेल चन्द्रमा धरि । आब

एकैसम शती चलि रहल अछि । लेकिन हम एखनहु इजोत सँ एतेक डराइ किएक छी ? किएक चाहै छी जे अन्हार कोठलीमे बन्न भऽ कऽ किल्ली ठोकि ली ।''[3]

अंधविश्वासमे पड़ि कतेको मनुक्खक जान चलि जाइछ । साप काटला पर ओकर इलाज करेबाक चाही नहि कि झाड़–फूक । तार्किकताक संग कथानकक माध्यमे ँ जे शिक्षाप्रद संदेश देल गेल अछि ओ अकाट्य अछि– ''लेकिन साप कटै छै तऽ गह्वरमे भगता झाड़ि दै छथिन– बिख उतरि जाइ छै । गुनी वा धाइमो झाड़ि दै छै तऽ ठीक भऽ जाइ छै, से ?''...

''देखही । साप कइएक तरहक होइ छै । लेकिन किछुए तरहक एहेन होइ छै जकर बिखसँ मनुष्य मरि जाइ छै, जेना अपना सभक दिस गहुमन, करैत आ एकाधटा आओर । आन सभके ँ बिख होइते नहि छै तऽ ओकर कटलाहा बाँचि जाइ छै। जश भेटि जाइ छनि झाड़ऽबला के ँ । लेकिन बिखधर जखन कटै छै तऽ झाड़–फूकक कोनो असरि नहि । आ झाड़ऽबला कहि दै छथिन जे एकरा काल काटि लेलकै । ते ँ साप कटलाहा के ँ तुरत अस्पताल पहुँचेबाक चाही । ओकरा आदंक सँ बचा कऽ राखक चाही । जतेक लोक बिखसँ नहि मरै छै, ताहिसँ बेसी आदंक सँ मरि जाइ छै ।''[4]

कथावस्तुक प्राण जिज्ञासा होइत अछि से एहि बाल उपन्यासमे अछि । फॉर्स्टरक कहब एहि सम्बन्धमे यथोचित अछि– ''A Plot is narrative of events, the emphasis on casuality. (अर्थात् कारणाश्रित घटनावलीक नियोजन कथावस्तु होइत अछि ।''[5]

उपन्यासक मूलाधार दोसर तत्त्व 'चरित्र–चित्रण' होइत अछि । चरित्र–चित्रणक सम्बन्धमे डॉ. अमरेश पाठकक कहब छन्हि जे– ''पाश्चात्य आलोचकक दृष्टिमे चरित्र–चित्रण उपन्यासक आत्मा मानल जाइत अछि । काव्यमे जे स्थान हमरा सभ रसके ँ दैत छियैक सएह स्थान पाश्चात्य आलोचक लोकनि उपन्यासमे चरित्र–चित्रणके ँ दैत छथिन । कारण उपन्यास व्यक्ति–चेतना प्रधान समाजक साहित्यिक अभिव्यक्ति अछि ।''[6]

समाजमे जे बलिप्रथा प्रचलित अछि तकर विरोध दूइ पीढ़ी अभिभावक ओ बच्चाक वार्त्तालाप ओकर चरित्रक दर्पण व्यक्ति–चेतनाक रूपमे कयल गेल अछि । द्रष्टव्य– ''बाबा ! तोहूँ कबुला करै छहक आ बलि दैत छहक ?''

''नहि ! ने कबुला–पाती, ने बलिप्रदान ।''

''आ कुमरम मे ? ओहिमे तऽ बलि देबैए पड़ैत हेतहए ।''

''नहि, ओहिमे मधुर चढ़बै छिऐ । भोजो मे मधुरे प्रसाद ।''

आकि ओकर चेहरा खिलि उठलै । कहलक– ''ई तऽ बड्ड नीक काज करै छह । देबी कतौ कहथिन जे तौ ँ हमर सन्तानक मुड़ी काटि कऽ हमरा पएर पर राखि दे ! एहन तऽ भइए नहि सकैए । लेकिन तोरा एखन धरि लोक बारलकऽह नहि?''[7]

उपन्यासक तेसर महत्त्वपूर्ण तत्त्व होइत अछि 'कथोपकथन' । उपन्यासमे कथोपकथनक महत्वक सम्बन्धमे भूपेन्द्र कुमार चौधरीक कहब छन्हि जे– ''ओना तँ उपन्यास मूलतः वर्णनात्मक–साहित्यिक–विधा थिक; मुदा चुकि एहिमे जीवनक कथा रहैछ, एकानेक मनुष्यक जीवनक चित्र रहैछ, अतएव मनुष्यक गप्प–सप्प स्वाभाविक रूपमे आबि जाइछ आ' एहि प्रसंगमे उक्त गप्प–सप्प जतेक बेसी यथार्थ एवं स्वाभाविक प्रतीत होएत ओतबए पाठकके ँ उपन्यास रोचक लगैतक । सामान्यतः जे चरित्र बजैत रहैए ओकर वर्ण, वातावरण, वयस एवं योग्यताक अनुकूल ओकर कथोपकथन होएबाक चाही ।''[8]

कथोपकथनक प्रसंगानुरूप जे भूपेन्द्र कुमार चौधरी कहने छथि तकर निर्वहन एहि उपन्यासमे कतेक दूर धरि भेल अछि से देखल जा सकैत अछि । ''...हँ, बाबा ! हम जानऽ चाहै छलहुँ जे साप कटलाहाक इलाज आखिर होइ छै कोना ।''

''झंझटि तऽ छै । सापक बिख मनुक्खक देहमे प्रतिरोधी बनबाक समये नहि दै छै । कटलाक बाद घंटा डेढ़ घंटामे रोगी खतम । ते ँ बाहर सँ ओहि बिखक प्रतिरोधी, रोगीक शोनितमे मिलौल जाइ छै ।''

''ओ प्रतिरोधी कतऽ भेटतै ?''

''तैयार करऽ पड़ै छै । करीब सवा सए साल पहिने, वैज्ञानिक सभ एकर तरीका निकाललनि ।

''ओ तरीका हमहूँ सभ बुझि सकै छिऐ ?''

''किएक ने ? बुझा दै छियौ । सापक तऽ बहुतो प्रजाति होइ छै, लेकिन बिखधर ओहमे सँ कम्मे होइ छै । भारतमे मुख्यतः चारिटा प्रजाति गहुमन, करैत, रसेल बाइपर आ सॉ–स्केल्ड वाइपर बिखधर होइ छै । पहिने एहि चारूक बिख, सापक विषदंतक बगल बला बटुआसँ अलग–अलग निकालल जाइ छै । तखन चारू के ँ मिला कऽ एकटा मिश्रण बनौल जाइ छै । आब ओहि मिश्रणक बहुत कम मात्रा घोड़ाक शोनितमे सूइ द्वारा पहुँचा देल जाइ छै । मात्रा ततबे रहै छै जे घोड़ा मरौ ने, जीबैत रहौ । धीरे–धीरे घोड़ाक शोनित मे ओहि चारू बिखक एंटीबॉडी अर्थात् प्रतिरोधी तैयार भऽ जाइ छै । ओहि एंटीबॉडीके ँ निकालि कऽ शीशीमे पैक कऽ देल जाइ छै । एकरा कहै छै एंटी स्नेक वेनम (ASV) । स्नेक वेनम माने सापक बिख आ एंटी माने प्रतिरोधी।''

''तखन मनुक्ख के ँ ई ए.एस.बी. देल कोना जाइ छै ?''

''बहुत सावधानी संग । जँ एकहि बेर मे एकर सूइ दऽ देतै तऽ बिख आ प्रतिरोधी के बीच बहुत जोर सँ लड़ाइ हेतै । ततेक जोरसँ जे मनुक्ख बुते सहले नहि हेतै आ ओ मरि जैत । तखन कोनो दोसर उपाय करऽ पड़तै । रोगीके ँ पानि चढ़बैत तऽ देखलिहीहए ?''

''हँ, हँ । ओ जे ठोपे–ठोपे खसै छै आ नस दने सोनितमे जाइ छै ? ओकरे ने कहै छै ड्रिप ?''

''बस । ओही ड्रिपक सङ ए.एस.बी. बहुत धीरे–धीरे रोगीक शरीरमे पहुँचा देल जाइ छै । बिख सेहो धीरे–धीरे शोनित मे नष्ट भऽ जाइ छै ।''[9]

बच्चाक जे जिज्ञासा आ प्रौढ़ शिक्षित द्वारा ओहिक निदान कथोपकथन वयस ओ योग्यताक अनुरूप एहिमे भेल अछि जे स्वाभाविक प्रतीत होइत अछि ।

अभिव्यंजनाक प्रकारकेँ 'शैली' कहल जाइत अछि । एहि बाल उपन्यासमे वर्णनात्मक, पत्रात्मक खण्ड–चित्रात्मक, चेतना प्रवाह तथा मिश्रित शैली आदिक प्रयोग एकहि संग भेल अछि। यथा– ''देखही, समुद्रक कात जमीन आ पानि दुनू एक दोसरसँ सटल रहै छै । जमीनकेँ गर्म होइ लेल पानिक तुलनामे बहुत कम गरमीक जरूरत होइ छै । तेँ जमीन बहुत जल्दी गर्म होइ छै आ जल्दी ठंढा । लेकिन पानि देर सँ गर्म होइ छै आ देरसँ ठंढा । आब की होइ छै तऽ दिनमे सूर्य गर्मीसँ जमीन गरम भऽ जाइ छै । लेकिन समुद्रक ठंढा पानि ओहि गर्मीकेँ सोखिकेँ धीरे–धीरे गर्म होइ छै । रातिमे जखन जमीन ठंढा भऽ जाइ छै तावत तऽ पानि गर्म रहै छै । ओ गर्म पानि ठंढा जमीन केँ गर्माहटि पहुँचबैत रहै छै । तेँ, जमीन पर रहनिहार लोकके दिनमे गर्मी कम आ रातिमे ठंढ़ा कम अनुभव होइ छै ।''[10]

एहिमे वर्णनात्मक, खण्ड चित्रात्मक (जे पोथीमे चित्रित अछि), चेतना प्रवाह अर्थात् मिश्रित शैलीक प्रयोग भेल अछि ।

एहि उपन्यासमे पत्रात्मक शैलीक प्रयोग सेहो भेल अछि । द्रष्टव्य–

''आदरणीय बाबा,

सादर प्रणाम ।

एतय कुशल । आशा अछि अहाँ लोकनि सकुशल हैब ।

अहाँ लोकनिक आशीर्वाद चाही जे हम कतहु भासि नहि जाइ ।

अहाँक पोती

बासंती''[11]

उपन्यासमे मनुक्खक चरित्रक विकास विभिन्न परिस्थितिक बीच होइत देखओल जाइत अछि तेँ वातावरण वा परिवेशक चित्रण बड़ महत्त्वपूर्ण स्थान रखैछ । मनुष्य जाहि वातावरणमे रहैछ ओकर वकतव्य, चिन्तन एवं कार्यकलापो ओकर अनुकूले होइत छैक। वातावरणक यथार्थता, स्वाभाविकता एवं सूक्ष्म चित्रण उपन्यासकेँ बेशीसँ–बेशी विश्वसनीय बना दैत अछि । मुदा वातावरणक निर्माणमे उपन्यासकारक व्यापक अनुभव, आवश्यक कल्पनाशीलता, स्मृतिक विलक्षणता एवं बिम्ब योजनाक सामर्थ्य बड़ महत्व रखैछ ।

एहि उपन्यासमे 'वातावरण' निर्माण एहि तरहेँ उपन्यासकार कयने छथि जे सामाजिक मान्यता ओ अंधविश्वासक बिम्ब नजरिक समक्ष उपस्थित भऽ जाइछ । यथा– ''जोगी जीक बालक जगन्नाथकेँ कहलिऐ– ''हौ देर किएक करै छह ? जल्दी सँ अस्पताल किएक ने लऽ जाइ छहुन ? हम अपन गाड़ी आनू ?

जगन्नाथ बाजल– ''नहि नहि ! एकदम नहि । गह्वर मे अस्पतालक नामो जुनि लिअऽ ।''

आकि भगता चिचिएलाह– ''के बजलैं, के बजलैं ? जीह काटि लेबौ ˙ सोनित पीबि लेबौ ।''

लोक सभ कऽल जोड़ि बाजल– ''अज्ञानी छथि । माफ कऽ दिऔन, भगवती !''[12]

झाड़–फूकक जे अंधविश्वासी परम्परा सामजमे कमो–बेश एखनो प्रचलित अछि तकर प्रतिबिम्बात्मक वातावरण जाही रूपे ँ उपस्थापित कयल गेल अछि उपन्यासमे ई उपन्यासकारक स्मृतिक विलक्षणता, ओ बिम्ब योजनाक सामर्थ्यक प्रतिफल अछि ।

उपन्यासमे जीवन एवं जगतक चित्रण रहैछ । उपन्यासकार पात्रक आश्रय लए अपन अनुभव जन्य घटना अंकित करैत अछि । जे एहि उपन्यासमे सभठाम देखबामे अबैत अछि ।

एहि बाल उपन्यासक माध्यमे उपन्यासकारक जे उद्देश्य छनि बच्चाक शिक्षामे मार्गदर्शन । विज्ञानक रहस्यक जानकारी देब । सामाजिक–सांस्कृतिक विकासमे बाधक भेल समाजमे व्याप्त अन्धविश्वास, रीति–रेवाजसँ बहरेबाक तार्किक बाट, ताहिमे पूर्ण रूपे ँ सफल भेल छथि ।

निष्कर्षतः

परम्पराक अनुसार चलब सहज ओ सरल अछि कारण ओहिमे कोनो नव चीजक खगता, बेगरता नहि पड़ैत अछि । बनल–बनाओल रेडीमेड रहैत अछि मुदा जखन परम्परासँ हटिके ँ किछु नव करय चाहै छी तँ ओहि लेल करय पड़ैत अछि बहुत चीजक ओरियान–पाती । ई बात लेखनक संग सेहो देखबामे अबैत अछि । जखन कोनो विधा नव रहैत अछि तखन ओहिमे लेखन बड़ कम होइत अछि आ जेना–जेना ओ पुरान होइत जाइत अछि तेना–तेना ओहि विधाक लेखक लोकनिक संख्यामे अभिवृद्धि देखबामे अबैत अछि । ई बात बाल उपन्यासक संदर्भमे सेहो कहल जा सकैत अछि। बाल उपन्यासकार अपन–अपन लेखनीक बलपर निरंतर योगदान दऽ रहल छथि। जाहिमे एकटा नाम अमरनाथ मिश्र ओ हुनक बाल उपन्यास 'बासंती प्रियंवदा'क सेहो लेल जाइत अछि जे नव भावभूमि पर, बाल साहित्यक आवश्यकता एवं महत्वक अनुरूप लिखल गेल अछि । बासंती प्रियंवदामे कथारूप कथांशक चित्र बालचित्रके ँ आकर्षित करैत अछि । हमर दृष्टिएँ मैथिली उपन्यास साहित्यमे जतेक बाल–उपन्यास उपलब्ध अछि नव भावभूमि, शैली ओ रचनाक उद्देश्यक दृष्टिएँ 'बासंती प्रियंवदा' बेछप अछि ।

संदर्भ सूची :

1. मिश्र, अमरनाथ, 2023, 'बासंती प्रियवंदा', सिद्धिरस्तु, दिल्ली, पृ. 3
2. तत्रैव, पृ. 5
3. तत्रैव, पृ. 19, 20
4. तत्रैव, पृ. 23, 25
5. पाठक, डॉ. अमरेश, 1975, 'मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन', आलोक प्रकाशन, राजेन्द्रनगर, पटना, पृ. 28
6. तत्रैव, पृ. 66
7. मिश्र, अमरनाथ, 2023, 'बासंती प्रियवंदा', सिद्धिरस्तु, दिल्ली, पृ. 23
8. चौधरी, भूपेन्द्र कुमार, 1972, 'मैथिली उपन्यास आ उपन्यासकार', ग्रन्थालय–प्रकाशन, टावर चौक, दरभंगा, पृ. 7
9. मिश्र, अमरनाथ, 2023, 'बासंती प्रियवंदा', सिद्धिरस्तु, दिल्ली, पृ. 49–51
10. तत्रैव, पृ. 55–56
11. तत्रैव, पृ. 91–96
12. तत्रैव, पृ. 77